जानें 'सदा शिव' परमात्मा के स्वरूप को

सत्य तो सत्य है, जो एक लाइन का होता है। जैसे आप हैं, ये सत्य है। लेकिन आप नहीं हैं, ये भी एक सत्य है। वो उस समय के हिसाब से है। इस दुनिया में सबकुछ एक ऊर्जा है। और ऊर्जा ना तो उत्पन्न की जा सकती है और ना ही नष्ट की जा सकती है। उसका परिवर्तन होता है। वैसे ही हम सभी एक चैतन्य शक्ति आत्मा, अविनाशी ऊर्जा हैं, ये सत्य है। उसी प्रकार से इस अविनाशी ऊर्जा को ऊर्जान्वित करने का स्रोत परम शक्ति, परम सत्ता परमात्मा है, जिनका नाम 'शिव' है। हमारी ऊर्जा प्रकृति के वश में आने से या वशीभूत होने से नष्ट होती जाती है, जो कि स्वाभाविक है, लेकिन परमात्मा एक ऐसी ऊर्जा है जो प्रकृति के पाँचों तत्वों से परे है, जो कभी नष्ट नहीं होती। उसकी ऊर्जा हमेशा संग्रहित रहती है। इसी को अनेक धर्मों में अलग-अलग नामों से लोगों ने जाना, पहचाना, लेकिन उसे कोई स्वरूप नहीं दिया। क्योंकि निराकार को कोई स्वरूप देना, उसके रूप के साथ न्याय नहीं होगा। वो एक ज्योति बिन्दु ऊर्जा के रूप में है। इसीलिए शायद सभी धर्म पिताओं एवं अन्य समाज सुधारकों ने मूर्ति पूजा का पुरजोर विरोध किया, क्योंकि परमात्मा ज्योति बिन्दु स्वरूप ही हैं।

क्या हम भी मिल सकते हैं उनसे?

यह चमत्कारिक रहस्य परमात्मा शिव के बारे में है, जो अकल्पनीय हैं, अद्भुत हैं। वो इस धरा पर अवतरित होकर स्वयं अपना ज्ञान अर्थात् अपने बारे में सभी को बताते हैं, और इतने सरल शब्दों में व सहजता से बताते हैं कि किसी को भी समझ में आ जाए कि क्या करना है, क्या नहीं करना है। कारण ये है कि सबसे पहले परमात्मा हमको अपनी समझ देते हैं कि मैं तुम सभी आत्माओं का पिता हूँ, और पिता कभी भी अपने बच्चों को किसी भी बात के लिए उदास व हताश नहीं देख सकता। वे आकर कहते हैं, तुम अपनी सारी शक्तियों को भूल चुके हो, इसलिए तुमको मैं तुम्हारी शक्तियों की याद दिलाने के लिए आता हूँ। इसका मिसाल रामचरित मानस में है, कि हनुमान की शक्तियाँ कहीं खो गई थी, तो जब उन्हें समुद्र के पार जाकर सीता का पता लगाना था, उस समय जामवंत ने कहा कि क्यों चुप बैठे हो हनुमान, अर्थात् उसे उसकी शक्तियाँ याद दिलाई। ये हमारा ही यादगार है और हमारा मिसाल है कि हमें ही अपनी शक्तियों को जानना समझना है व अपने निजी स्वरूप में स्थित होना है। जिसके आधार से परमात्मा से मिलन सम्भव है।

परमात्मा ही गीता ज्ञान के दाता

गीता शब्द गीत से बना है, चूंकि गीत बहुत ही मधुर और मनमोहक होता है, जिसे सभी लोग सुनकर आनंद विभोर हो जाते हैं। उसी प्रकार परमात्मा अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा जो ज्ञान देते हैं, वो भी एक गीत की तरह है, जिसे बहुत ध्यान से सुनकर उस पर अमल कर उसका आनंद ले मनमोहक 'कृष्ण' पैदा होता है। परमात्मा शिव सच्चा गीता ज्ञान दाता है, जिस गीता को सुनकर ही मनमोहन की तरह बना जा सकता है।

श्रीमद्भगवद् गीता के लिए संसार में लोग कहते हैं कि इसे सुनकर मोक्ष व स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जीवन के अंतिम क्षणों में गीता ज़रूर सुननी चाहिए, ये एक मान्यता है। ये विचारणीय है कि बहुतों ने इस जीवन के दौरान और अंतिम क्षणों में गीता सुनी व पढ़ी है लेकिन क्या उन्हें मोक्ष या स्वर्ग मिला होगा? आज उसी मोक्ष व स्वर्ग को दिलाने के लिए परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित हो सहज गीता ज्ञान से स्वर्णिम संसार लाने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। वैसे भी गीता में वर्णित है कि मुझ परमात्मा को समझने व जानने के लिए दिव्य चक्षु अर्थात् दिव्य ज्ञान चाहिए। उसके बिना मैं जाना नहीं जा सकता। भगवान शिव के इस ज्ञान को ही गीता कहा जाना चाहिए, ऐसा हमारा मानना है। जिसे सभी समझकर उस राह पर चल अपने जीवन में अपनाकर देवत्व ला सकते हैं। गीता-ज्ञान उस ज्ञान के सागर, पतित पावन, सर्व आत्माओं के परमपिता, मानव को देवता बनाने वाले, एक मात्र भगवान 'शिव' ने दिया था, जो कि श्रीकृष्ण के भी परमपिता हैं। श्रीकृष्ण ने तो उन परम सद्गुरू शिव से ही वह श्री नारायण पद प्राप्त किया था। इसलिए वृन्दावन में गोपेश्वर का मंदिर है, जिसमें दिखाया गया है कि भगवान शिव श्रीकृष्ण के भी पूज्य हैं और गोप-गोपियों के भी मान्य ईश्वर हैं।

जी हाँ, हमने की है परमात्मा के स्वरूप की अनुभूति

पूरी तरह से तो कोई घटना सत्य नहीं मानी जाती। लेकिन जब कोई अपना अनुभव सुनाता है, तो उसमें वो बातें सामने आती हैं जो मानने योग्य होती हैं। उन्हीं माननीयों में कुछ महान आत्मायें शामिल हैं जिन्होंने अपने अनुभवों में परमात्म स्वरूप की अनुभूति को संजोया है। ऐसी ही कुछ अनुभूतियाँ उन्हीं के शब्दों में हम आपके सामने रख रहे हैं...।

इस ज्ञान से ही सुंदर भविष्य संभव

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पढ़ाई का पहला उद्देश्य है कि व्यक्ति पहले स्वयं को जाने कि मैं कौन हूँ, मेरा कर्त्तव्य क्या है, मेरे माता-पिता कौन हैं, अपना असली देश क्या है, अपनी संस्कृति क्या है। मेरा मानना है कि आज जिस प्रकार शिक्षा पद्धति पश्चिमी होती जा रही है, तो अगर उसको फिर अपनी संस्कृति की ओर लाना है तो इसके लिए ऐसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का होना आवश्यक है। आज समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत शांति है जो कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही समाज को प्राप्त हो सकती है। उन्हीं के ज्ञान से सुंदर भविष्य आयेगा और समाज तथा राष्ट्र को उत्कृष्ट करेगा। - **शास्त्री जीवनदास, मैनेजिंग ट्रस्टी, श्री स्वामीनारायण गुरुकुल।**

बाबा से मुलाकात जीवन के सबसे सुखदाई पल

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं, उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एक साथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे, यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई नगर है, तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। साकार बाबा से मेरी तीन मुलाकातें हुईं और वे मेरे जीवन के सबसे सुखदाई पल थे।

- **डॉ. स्वामी केशवानंद सरस्वती, काशी।**

बाबा के सानिध्य में छोटे बच्चे जैसा अनुभव हुआ

समस्त विश्व में ऐसी व्यवस्था नहीं है जैसी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में है। यह अनुभव करने की बात है, बयाँ करने की बात नहीं है। मैं जब माउण्ट आबू में परमात्म मिलन के अवसर पर पहुँचा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे एक छोटे बच्चे को अपने घर में माँ-बाप की गोद मिल गई हो। ऐसा लगा मानो वो मुझे सहला रहे हैं। यहाँ के पवित्र वातावरण और व्यवस्था जैसी पारदर्शिता संसार में और कहीं नहीं। - **महामण्डलेश्वर दर्शन सिंह त्यागमूर्ति, अध्यक्ष, षड्दर्शन साधु समाज एवं धर्म स्थान सुरक्षा ट्रस्ट, हरिद्वार।**

अल्लाह, खुदा का रुप निराकार ज्योति स्वरुप

अल्लाह, खुदा, गॉड व भगवान वास्तव में एक ही है। वह निराकार ज्योति है। पवित्र कुरान में एक लाख पैगम्बरों का वर्णन है, जिन्होंने समय-समय पर इस धरा पर अवतरित होकर मानव जाति को यह शिक्षा दी है कि परमात्मा एक है और वह ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। ब्रह्माकुमारीज़ बहुत ही सरल ढ़ंग से पूरे विश्व को यह शिक्षा दे रही है कि कैसे परमात्मा से अपना सीधा सम्बन्ध जोड़ें तथा उसकी इबादत करें। जिससे मन को शांति व सुकून की अनुभूति हो।

- **शाहबाज़ खान, प्रसिद्ध फिल्म कलाकार, मुम्बई।**